

पद २७५

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

मत बाजो मत बाजो मुरली कन्हैया । आग लगो तोरे मुरलीकु
सैय्या ॥ध्रु०॥ जमुनाके नीर तीर गौवें चरावे । बन्सी बजावे वोहि
कन्हैया ॥१॥ जद तेरे मुरलीकी धून सुनैय्यां । गृहद्वार मंदिर सून
दिखैय्या ॥२॥ मानिकके प्रभु नाथ कृष्णजी । काहेकुऐसी बन्सी
बजैय्या ॥३॥